बहुभाषिकता विविध आयाम

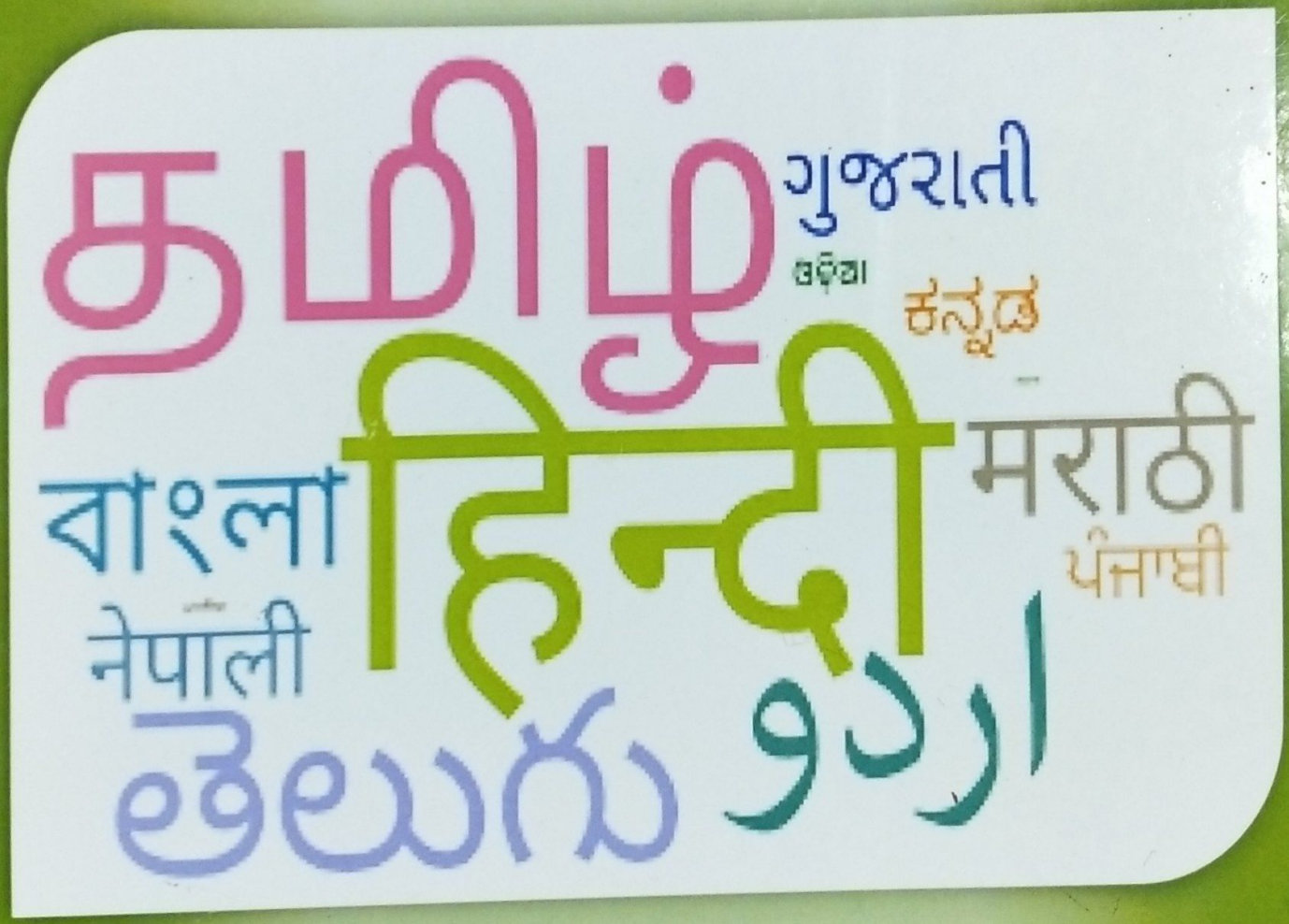

संपादक

डॉ. हर्षलता शाह

डॉ. सरोज सिंह

Book Details

Book Name	:	बहुभाषिकता विविध आयाम
Editors	:	डॉ. हर्षलता शाह
		डॉ. सरोज सिंह
Edition	:	2018
Pages	:	100
Book Size	:	CROWN
Price	:	Rs, 200/-
Printed by	:	Today Graphics
		192 Bells Road
		Chepauk
		Chennai-5
Publisher	:	Today Publisher
		192 Bells Road
		Chepauk
		Chennai-5
ISBN	:	98-93-87882-31-7

अनुक्रमणिका

बहुभाषिकता : विविध आयाम

1	हिन्दी की बोलियों के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य का बहुभाषिक स्वरूप - डॉ. सुधा द्विवेदी	1
2	भारतीय साहित्य में बहुभाषिकता - डॉ. पी. नज़ीम् बेगम्	6
3	भारत की बहुभाषिकता और हिन्दी वैश्वीकरण और अनुवाद के संदर्भ में - डॉ. अनुपमा के.	12
4	नरेन्द्र शर्मा विरचित द्रौपदी खंडकाव्य के आधार पर - डॉ. के. एस. प्रणतार्तिहरन	19
5	बहुभाषिक कहानियों में विविध आयाम - डॉ. रंजना राय	21
6	भारत में बहुभाषिकता, भारतीय संस्कृति और हिन्दी सिनेमा -डॉ. श्रावणी भट्टाचार्य	29
7	बहुभाषिकता और समाज - डॉ. वी. जयलक्ष्मी	31
8	बहुभाषिकता - डॉ. ए. फातिमा	37
9	हिन्दी का बहुभाषिक स्वरूप -डॉ. रोहिणी पांडियन	42
10	संपूर्ण विश्व एवं बहुभाषिकता : एक दृष्टि - डॉ. रानू राठौर	44
11	पश्चिमी हिन्दी की विभिन्न बोलियाँ और बहुभाषिकता - डॉ. शाज़िया फ़रहाना. आई	48
12	हिन्दी की बोलियाँ व बहुभाषिकता - डॉ. मोहनम्बाल नज़ीम् परवीन	53
13	हिन्दी-तमिल-कन्नड़ भाषा के साहित्य में प्रशासनिक भ्रष्टाचार - डॉ. के. विजयालक्ष्मी	58
14	हिन्दी साहित्य में हिन्दीतर प्रदेशों का योगदान - डॉ. बीना कुमारी नायर	61

हिन्दी साहित्य में हिन्दीतर प्रदेशों का योगदान

डॉ. बीना कुमारी नायर
सहायक प्रवक्ता
लॉयला कॉलेज, चेन्नई

भारत एक बहुभाषी देश है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण अपने विचारों का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से ही करता है। भाषा के माध्यम से ही हम राष्ट्रीयता स्थापित कर सकते हैं। भारत में हरेक प्रांत में बोली जाने वाली भाषाएँ भिन्न-भिन्न होने पर भी आचार-विचार में एकता होने के कारण राष्ट्रीय एकता के लिए एक शक्तिशाली रूप बन गई है।

भारतीय समाज की बहुभाषी व्यवस्था ने अल्पसंख्यक भाषा-समाज के अस्तित्व को न केवल स्वीकार किया है अपितु उसको बृहत्तर सामाजिक संप्रेषण व्यवस्था के साथ जोड़ने के लिए संपर्क भाषा की व्यवस्था को व्यावहारिक रूप भी दिया है।

हिन्दी भाषा-विभाषा एवं द्विभाषा के रूप में हिन्दीतर भाषा क्षेत्रों में अपना दायित्व निभाकर राष्ट्र को एक-सूत्र में बाँधती है। प्रांतीय भाषाएँ ही राष्ट्र की भावनात्मक एकता की आधार शिला होती है। दक्षिण भारत में भी हिन्दी का उपयोग बहुत पहले ही होने लगा था। तेलगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम ये चार सशक्त भाषाओं से सम्पन्न पूरा दक्षिण भारत एक संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का उपयोग कर रहा था। तीर्थयात्रियों, व्यापारियों, पर्यटकों एवं विद्वानों के लिए एक ऐसी भाषा की ज़रूरत थी जो एक सेतुबंधन का काम करे। यह काम हिन्दी के अलावा और कोई दूसरी भाषा से संभव नहीं था इसलिए देश के अनेक राष्ट्रनायकों ने हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में मान्यता दी। महात्मा गाँधी जी ने इसको पूर्ण रूप से स्वीकार किया।

गाँधीजी ने दक्षिण भारत में हिन्दी-प्रचार का केन्द्र मद्रास में निश्चित करके वस्तुतः अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया। महात्मा के हाथों से स्थापित यह वटवृक्ष अंकुरित, पल्लवित होकर कालान्तर में पुष्पित एवं फलयुक्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप आज लाखों की संख्या में जनता ने हिन्दी को दिल से अपनाकर उसका समुचित रूप से प्रचार-प्रसार किया। कोई भी भाषा राष्ट्रभाषा के रूप में तभी सशक्त हो